Forwarded.
Head
University Department of Political Science
Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga

श्री अरविन्दो के आदर्शात्मक मूल्यों का आधुनिक शिक्षा पर प्रभावः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय कामेश्वरनगर, दरभंगा

के

सामाजिक विज्ञान संकाय (राजनीति विज्ञान) में

पी–एच0 डी0 उपाधि हेतु

प्रस्तावित शोध प्रारूप

शोध पर्यवेक्षक

डा0 अरविन्द वर्मा
विभागाध्यक्ष
राजनीति विज्ञान विभाग
राम कृष्ण महाविद्यालय
अंगीभूत इकाई,
ल0 ना0 मि0 वि0वि0, दरभंगा

गवेषिका

नेहा
PAT रॉल नं0–22160123
सत्र–2021–22

पी–एच0 डी0 उपाधि हेतु प्रस्तुत शोधप्रारूप

सामाजिक विज्ञान संकाय (राजनीति विज्ञान)

ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

1. शोध परियोजना का शीर्षक (Title of the Research Project) :

श्री अरविन्दो के आदर्शात्मक मूल्यों का आधुनिक शिक्षा पर प्रभावः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

2. शोध समस्या का अध्ययन (Research Problem) :

समय की माँग या यों कहे कि भारत माता विश्व में व्याप्त मोह, माया एवं अज्ञानता रूपी अन्धकार को दूर करने के लिए सदैव दिव्य आत्माओं एवं योगियों को अपने गर्भ से उत्पन्न करती रहती है। इन्हीं दिव्य आत्माओं, सिद्ध पुरूषों एवं योगियों में से एक हैं महायोगी अरविन्द, जिन्होंने पाश्चात्य जगत के भौतिकवादी प्रभाव को रोकने के लिए आध्यात्मिक ज्योति को प्रज्वलित करने का काम किया जिससे पश्चिम के बढ़े प्रभुत्व को रोका जा सका ।

इन महान आत्मा का जन्म 15 अगस्त 1872 को हुआ। उनका जन्म कलकता में उनकी माता की सखी श्रीमती स्वर्णलता के घर में हुआ। उनके पिता का नाम डाक्टर कृष्णधन घोष था। उनके पिता उस समय कलकता के खुलना में कार्यरत थे। उनके पाँच बच्चे थे। श्री अरविन्द के पिता पाश्चात्य शिक्षा के समर्थक थे अतः वे श्री अरविन्द को पाश्चात्य शिक्षा देना चाहते थे ।

उपनिवेशवादी सांस्कृतिक एजेंडा के तहत बेंटिक और मैकाले ने पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली की हिन्दुस्तान में दिशा निर्देशित कर दिया और इस तरह जिस पश्चिमी आधुनिक शिक्षा का श्रीगणेश हिन्दुस्तान में हुआ उसमें देश के महान सांस्कृतिक मूल्यों, चारित्रिक सद्गुणों और नैतिक सांस्कृतिक मूल्यों को नजर अन्दाज कर दिया गया था।

पाश्चात्य शिक्षा के माध्यम से उपनिवेशवादी चाहते थे कि ऐसे भारतीयों का अल्पसंख्यक समूह पैदा किया जाय जो न केवल हिन्दुस्तान में अपितु ब्रिटिश प्रशासन की भी सेवा कर सके और मानसिक दासता से युक्त हीन भावना वालों

17/04/24 19/04/24

की तादाद इस देश में बढ़े। किसी भी दृष्टिकोण से कम्पनी कालीन शिक्षा का ध्येय श्रेष्ठ मानव मूल्यों से युक्त ज्ञान–विज्ञान की शिक्षा को प्रोत्साहित करना नहीं था। वास्तव में कम्पनीकालीन शिक्षा व्यवस्था भारतीय भूमि पर अपना धरातल निर्माण कर रहा था जिससे कि देश को गुलाम बना कर राज्य किया जा सके और हिन्दुस्तान की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को तवाह किया जा सके ।

प्रारम्भ में भारत के बुद्धिजीवियों ने पाश्चात्य शिक्षा का जोरदार स्वागत किया लेकिन जैसे ही इसके मकसद के बारे में जाना तो देश के बुद्धिजीवियों ने औपनिवेशिक शिक्षा नीति के राष्ट्रीय विकल्प खोजना आरम्भ कर दिया। कम्पनी कालीन शिक्षा नीति का उद्देश्य पश्चिमी राज की शिक्षा नीति का प्रचार प्रसार करना था जबकि हिन्दुस्तानी आधुनिक शिक्षा के माध्यम से देश में नवजीवन का श्रीगणेश चाहते थे और यह नवजीवन हिन्दुस्तानी माटी से जुड़ा हुआ था जिसको जड़ें हिन्दुस्तान की प्राचीन सांस्कृतिक मूल्यों और नैतिक आदर्शो की मजबूत आधार के अन्दर तक समायी हुई हो। देश के बुद्धिजीवियों ने देशी भाषा के तहत विज्ञान तथा जनशिक्षा पर आधारित एक विकल्प तैयार और लागू करने का प्रयत्न किया।

पाश्चात्य शिक्षा के विकल्प के रूप में देश के बुद्धिजीवियों ने अनेक शैक्षिक संस्थाएँ और संस्थाएँ स्थापित किए। अक्षय कुमार दत्त प्रथम भारतीय थे जिन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा योजना प्रस्तावित किए। महादेव गोविन्द राणाडे, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, वीरेशलिंगम, सैयद अहमद खाँ, महेन्द्र लाल सरकार, केशव चन्द्र सेन, स्वामी विवेकानन्द, महेन्द्र लाल सरकार, टैगोर, महात्मा गाँधी आदि ने आधुनिक ज्ञान–विज्ञान की शिक्षा को तो अपरिहार्य माना, किन्तु मानव मूल्यों, स्वाभिमान तथा राष्ट्रीय गौरव के उत्प्रेरण के साथ आधुनिक ज्ञान–विज्ञान की शिक्षा को सामिल कर दिया गया।

इतना ही नहीं स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 'वेदों की ओर चौट चलो' का नारा देते हुए देश के सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित ज्ञान–विज्ञान की आधुनिक शिक्षा को हिन्दुतान के उन्नति के लिए कारगर बताया। अतः स्पष्ट है कि समूचे

19/04/24

19/04/24

औपनिवेशिक समय में अंग्रेजी शिक्षा नीति एवं प्रणाली का जोरदार विरोध का सामना करना पड़ा और इसके राष्ट्रीय विकल्प और छवि को फैलाने में मनीषियों की एक लम्बी सूची है जिसमें अग्रगण्य विचारक हैं–श्री अरविन्द घोष, जिनका शिक्षा सम्बन्धी विचार कम्पनी कालीन शिक्षा के राष्ट्रीय विकल्प के क्षेत्र में एक अतिमहत्वपूर्ण ऐतिहासिक अवदान समझा जा सकता है।

श्री अरविन्द घोष मूलतः फ्रेंच तथा अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य के प्रकांड विद्वान थे। वे बंगाल प्रान्त के उग्रवादी प्रखर नेता एवं आध्यात्मिक विचारक भी थे। देश की राजनीति में उनका योगदान एक धूमकेतु की तरह हुआ। हिन्दुस्तान की राजनीति में जितना सम्पर्क उग्रवादी नेता लाल–बाल–पाल से था उतना ही बंगाल के क्रांतिकारियों से भी था। कहा जाता है कि श्री अरविन्द की संलिप्तता मुजफ्फरपुर बम कांड से था। उनके 'युगान्तर' और 'कर्मयोगिन' जैसी पत्रिकाओं में छपी विचारोत्तेजक आलेखों से होती है। मुजफ्फरपुर बम कांड में संलिप्तता ने उन्हें एक प्रखर राजनेता बना दिया। इस कांड की गिरफ्तारी और जेल से रिहाई उने उन्हें राजनीति से सदा के लिए अलग कर दिया।

वे अंग्रेजों के दमनात्मक शासन से बचने के लिए पांडिचेरी चले गए, इस यहाँ फ्रांसीसियों का नियंत्रण था। वही उन्होंने एक आश्रम की स्थापना की और जीवन पर्यन्त समग्र योग साधना में लीन रहे। सन 1914 में पांडिचेरी में उन्होंने 'आर्य' पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ कर दिया। इस पत्रिका के माध्यम से उन्होंने शिक्षा दर्शन से सम्बन्धित कइ पुस्तकों का प्रकाशन किया। श्री अरविन्द घोष ने 1943 में अपने आश्रम में एक विद्यालय खोले और अपने शिक्षा दर्शन के अनुरूप शिक्षण–प्रशिक्षा आरम्भ किया। आज यह संस्था एक अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षण संस्थान के रूप में प्रतिष्ठित है। 'ए सिस्टम ऑफ नेशनल एजुकेशन' और 'ऑन एजुकेशन' के माध्यम से उन्होंने अपने शिक्षा दर्शन का प्रवर्त्तन में किया। इनके अतिरिक्त लगभग एक दर्जन से भी अधिक किताबों में उनके शिक्षा सम्बन्धी विचार बिखरे पड़े हैं।

19/04/24

19/04/24

श्री अरविन्द के अनुसार शिक्षा मानव–मन तथा आत्मा की नव शक्तियों का निर्माण करती ह। यह ज्ञान, चरित्र तथा संस्कृति का उत्कर्ष करती है। उनका मत था कि छात्रों के मस्तिष्क में सूचनाओं और आँकड़ों को भर देना शिक्षा नहीं है। अपितु शिक्षा का वास्तविक अर्थ तो मानव मन तथा आत्मा की सर्वोत्कृष्ट शक्तियों एवं गुणों का निर्माण एवं विकास ही सच्ची शिक्षा है।

श्री अरविन्द के अनुसार मनुष्य एक विकासशील प्राणी है जो पशु से मानव और फिर महामानव, भोगी से योगी, अज्ञानी से ज्ञानी तथा दानव से देवता बन सकता है और यह समग्र विकास शिक्षा से ही संभव है। उनका शिक्षा दर्शन मनुष्य के समग्र एवं सर्वांगीण उत्कर्ष के लक्ष्य पर केन्द्रित है। इसीलिए श्री अरविन्द के शिक्षा दर्शन को समग्र शिक्षा के नाम से भी अभिहित किया जाता है।

श्री अरविन्द का कहना है कि छात्रों में नैतिक, आध्यात्मक जैसे गुणों को अंकुरित करना ही शिक्षा का उद्देश्य है। उनका मानना है कि शरीर एक भौतिक आधार, समस्त मानवीय कार्यों का साधना तथा सर्वोन्नति का माध्यम है और शरीर बुद्धि, विवेक एवं चरित्र से नियंत्रित होता है। अतः शिक्षा का उद्देश्य शारीरिक विकास होना चाहिए जो अनुशासन और प्रशिक्षण के द्वारा ही संभव है।

तमाम मानवीय सद्‌गुणों, ज्ञान तथा कौशल को श्री अरविन्द शिक्षा के माध्यम से उत्प्रेरित एवं आलोकि करने का जरिया मानते हैं, जो प्रसुप्त एवं अज्ञानता के अंधकार में छिपे होते हैं। श्री अरविन्द का मानना है कि शिक्षा उन्हें ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करता है। उनका मानना है कि शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए। उन्होंने शिक्षा के पाठ्‌यक्रम का भी निर्धारण किया। प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा के सभो स्तरों पर उन्होंने मातृभाषा, अंग्रेजी तथा फ्रेंच भाषा के अध्ययन को आवश्यक माना। उनका मानना था कि भाषा एवं साहित्य मनुष्य में सृजनात्मक शक्ति को उत्प्रेरित और आन्तरिक ज्ञान एवं गुणों की अभिव्यक्ति में सहायक होता है।

19/04/24

19/04/24

श्री अरविन्द घोष ने प्राथमिक स्तर पर भाषा एवं साहित्य के अलावे सामान्य विज्ञान, गणित, सामाजिक अध्ययन तथा चित्रकला को पाठ्यक्रम में जोड़ दिया। फिर माध्यमिक स्तर पर प्राकृतिक विज्ञान, गणित एवं सामाजिक विज्ञान चित्रकला को पाठ्यक्रम में समाहित किया, तो श्री अरविन्द ने उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में हिन्दुस्तानी एवं पाश्चात्य दर्शन, समाजशास्त्र, इतिहास, प्राकृतिक विज्ञान की सभी शाखाओं, गणित, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध तथा वैश्विक एकता जैसे विषयों को जगह दिया। स्पष्ट है कि श्री अरविन्द ज्ञान के क्षितिज के क्रमिक विकास को प्रोत्साहित करना चाहते थे।

श्री अरविन्द अपने शिक्षा दर्शन के द्वारा योग और भारत के सांस्कृतिक –आध्यात्मिक– नैतिक मूल्यों से भारतीयों को लैस करना चाहते थे ताकि ज्ञान तथा चरित्र से युक्त स्वाभिमानी भारतीय का निर्माण हो सके। पांडिचेरी में अन्तर्राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना कर उन्होंने अपने शिक्षा दर्शन को व्यवहार में उतारने का प्रयोग किया।

स्पष्ट है कि श्री अरविन्द घोष ने 19वीं सदी के प्रारंभ में औपनिवेशिक शिक्षा के विकल्प के रूप में चले राष्ट्रीय शिक्षा आंदोलन में अपने शिक्षा–दर्शन से महत्वपूर्ण योगदान दिया। परन्तु रवीन्द्र नाथ टैगोर, स्वामीन विवेकानन्द और सर्वोपरि महात्मा गाँधीन तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती की भांति आधुनिक भारत में शिक्षा के विकास एवं विस्तार के इतिहास में स्मरण नहीं किए जाते। यदि महात्मा गाँधी और स्वामी दयानन्द सरस्वतनी को छोड़ भी दिया जाय तब भी विद्यासागर, सैयद अहमद खाँ, वीरेशलिगम अथवा केशव चन्द्र की तरह भी शिक्षा के क्षेत्र में वे यदि ख्याति अर्जित नहीं कर पाए तो आखिर इसका क्या कारण है ? उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय शिक्षा के सभी पैरोकारों की भांति श्री अरविन्द ने भी मातृभाषा के माध्यम से आधुनिक ज्ञान–विज्ञान तथा नैतिक, चारित्रिक सद्गुणों की मूल्य आधारित शिक्षा की वकालत की थी और यही कारण है कि उनके शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। किन्तु उनके शिक्षा दर्शन के व्यवहारिक पक्ष का सही आंकलन नहीं

19/04/24

19/04/24

किया जा सका। आज भोगवादी संस्कृति के बढ़ते जोर के दौर में श्री अरविन्द के शिक्षा दर्शन पर पुनर्विचार की आवश्यकता है, जो गम्भीर गवेषणा के द्वारा ही किया जा सकता है। अक्षय कुमार दत्त और वीरेशलिंगम से लेकर दयानन्द सरस्वती एवं महात्मा गाँधी तक राष्ट्रीय शिक्षा के प्रमुख प्रवर्त्तकों के शिक्षा दर्शन का श्री अरविन्द घोष के शिक्षा दर्शन से तुलनात्मक अध्ययन से संभवतः भारत में राष्ट्रीय शिक्षा के इतिहास में श्री अरविन्द के योगदान तथा स्थान को निरूपित किया जा सकता, जो एक गहन अन्वेषण द्वारा ही संभव है। जाहिर है कि राष्ट्रीय शिक्षा के विकास में श्री अरविन्द घोष की भूमिका की गवेषणा और उसके आधार पर उनके ऐतिहासिक अवदान का आलोचनात्मक विवेचन प्रस्तावित शोध कार्य का अभीष्ट है।

3. पूर्व अध्ययनों की समीक्षा (Review of Literature) :

सम्पूर्ण संसार में केवल मनुष्य ही एक एसा प्राणी है जो वषो से एकत्र किये गये ज्ञान का लाभ उठा रहा है। ज्ञान के क्षेत्र में विशिष्टता प्राप्त करने एवं नवीन प्रभावपूर्ण शोध हेतु सम्बन्धित साहित्य की जानकारी की आवश्यकता अपरिहार्य है। किसी भी क्षेत्र का साहित्य एक ऐसी आधारशिला होती है जिस पर समस्त भावी कार्य आधारित होता है यदि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नींव को मजबूत नहीं कर लेते तो किया जाने वाला कार्य प्रभावहीन हो जाता है तथा यह भी सम्भव है कि किसी भी कार्य की पुनरावृत्ति हो ही जाये। अतः अन्य क्षेत्रों की तरह शिक्षा के क्षेत्र में भी किसी विशिष्ट उपक्षेत्र में, जिसमें से अनुसन्धानकर्त्ता शोध हेतु समस्या का चयन करता है, सैद्धान्तिक एवं क्रियात्मक दृष्टि से क्या कार्य हो चुका है इसकी आधुनिक जानकारी होना नितान्त आवश्यक है।

श्री अरविन्द घोष और फिर औपनिवेशिक काल में चले राष्ट्रीय शिक्षा आंदोलन एवं उसमें श्री अरविन्द के योगदान पर अनेक महत्वपूर्ण अध्ययन किए गए हैं। ऐसे अध्ययनों में एडवर्ड शिल्स की, दि इंटलेक्चुअल विटविन ट्रैडिशन एंड मडर्निटी : दि इंडियन सिचुएशन (हेग, 1961), एस0 सी0 घोष की, एजुकेशन पॉलिसी इन इंडिया सिन्स वारेन हेस्टिंग्स, (कोलकाता, 1989), हरीदास मुखर्जी एवं

Amit
19/04/24

19/04/24

उमा की, दि ओरिजीन्स ऑफ दि नेशनल एजुकेशन मूवमेंट (1905–1910), (कोलकाता, 1957), जे.पी. नायक एवं एस. नरूला की, ए हिस्ट्री ऑफ एजुकेशन इन इंडिया (नई दिल्ली, 1943), जे.पी. नारायण की एजुकेशन फॉर आवर पिपुल (नई दिल्ली, 1978), पीटर हीस की, दि लाइब्स ऑफ श्री अरविन्दः ए बायोग्राफी (पांडिचेरी, 2008), मनोज कुमार सिह की, भारतीय राजनीतिक चिन्तक अरविन्द घोष (नई दिल्ली, 2008), बिन्दु नारायण प्रसाद की, श्री अरविन्द (नई दिल्ली, 2004), अनुराधा प्रसाद की, महात्मा गाँधी और अरविन्द घोष का तुलनात्मक अध्ययन आदि पुस्तकों को परिगणित किया जा सकता है। परन्तु इनमें श्री अरविन्द के शिक्षा दर्शन को तत्कालीन परिप्रेक्ष्य में और राष्ट्रीय शिक्षा आंदोलन में उनके योगदान को तुलनात्मक अध्ययन द्वारा निरूपित नहीं किया गया। साथ ही उनके शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता पर भी अबतक कोई गम्भीर अध्ययन नहीं किया जा सका है। प्रस्तावित शोध परियोजना श्री अरविन्द के शिक्षा दर्शन पर अबतक हुए इतिहास लेखन में इन अभावों की पूर्ति का एक विनम्र प्रयास है।

4. उद्देश्य, महत्व एवं प्रासंगिकता (Aims, objectives and Relivance):

प्रस्तावित शोध परियोजना का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा आंदोलन के इतिहास में श्री अरविन्द घोष के योगदान का समग्र अध्ययन करना है। आज जबकि बाजारवाद और उपभोक्तावादी संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के कारण मनुष्य का नैतिक अधोपतन हो गया है और वह पूरे तौर पर भोगी हो चुका है, जिसके कारण सर्वत्र अनैतिकता, भ्रष्टाचार, अनाचार, अपराध और भोग की लिप्सा व्याप्त है। प्रस्तुत शोध कार्य को निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रख कर पूरा किया जाएः

1. श्री अरविन्द घोष के जीवन का अध्ययन करना।

2. पाश्चात्य शिक्षा दर्शन का अध्ययन करना एवं भारतीय समाज पर उसके दुष्प्रभावों को रेखांकित करना।

3. आधुनिक शिक्षा दर्शन का अध्ययन करना

4. श्री अरविन्द के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

5. राष्ट्रीय शिक्षा आंदोलन में श्री अरविन्द घाष के योगदानों को रेखांकित करना।

श्री अरविन्द घोष के शिक्षा दर्शन का प्रासंगिक महत्व है, जो भोगी मनुष्य को नैतिक मूल्यों से संपृक्त कर योगी बना सकता है और समाज में व्याप्त विनाशकारी भौतिक प्रवृत्तियों को नियंत्रित कर सकता है।

5. शोध परिकल्पना (Hypothesis):

1. श्री अरविन्द्र घोष की शिक्षा प्रणाली प्रासंगिक है ।

6. ज्ञान के क्षेत्र में योगदान(Contribution to the Field of Knowledge) :

प्रस्तावित अध्ययन की दृष्टि प्रगतिशील एवं यथार्थवादी होगी और यह तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित होगा। अतः शोध क्रम में नवीन तथ्यों, सूचनाओं, आंकड़ों और व्याख्या तथा मूल्यांकन के नए सामान्यीकरण की प्राप्ति की प्रबल संभावना है, जिससे निश्चय ही ज्ञान के क्षेत्र में अभिवृद्धि होगी।

7. अध्ययन का क्षेत्र (Scope of the Study):

प्रस्तावित शोध परियोजना का अध्ययन क्षेत्र मूलतः औपनिवेशिक भारत का इतिहास होगा। चूँकि आधुनिक शिक्षा औपनिवेशिक सांस्कृतिक एवं साम्राज्यवादी नीति का परिणाम है और इसके प्रत्युत्तर में भारत में चले राष्ट्रीय शिक्षा आंदोलन भारत में हुए सामाजिक–बौद्धिक परिवर्त्तन तथा उपनिवेशवाद विरोधी चेतना के विकास की स्वाभाविक परिणति थी, अतः प्रस्तावित शोध का अध्ययन क्षेत्र आधुनिक भारत का वह इतिहास होगा जिसमें उपनिवेशवाद तथा भारत में नवजागरण तथा राष्ट्रवाद के विकास का अध्ययन सहज समाहित है।

8. अध्ययन पद्धति (Methodology) :

प्रस्तावित शोध परियोजना को ऐतिहासिक आलोचनात्मक पद्धति का अवलम्बन कर पूरा किया जायगा। गौरतलब है कि भारत में हुए राष्ट्रीय शिक्षा आंदोलन और इसके प्रमुख संवाहकों के शिक्षा दर्शनों का इतिहास लेखन अथवा साहित्य में अत्यंत ही महिमा मंडन हुआ है और इसी रूप में यह भारतीय विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में भी शामिल है। अतः प्रस्तावित विषय पर अध्ययन

19/04/24

19/04/24

वस्तुनिष्ठ, प्रगतिशील एवं वैज्ञानिक दृष्टि के साथ कठोरतापूर्वक आलोचनात्मक पद्धति के अनुशासन के अनुपालन की अपेक्षा रखता है, जिसके अनुपालन का प्रयास अध्ययन के दौरान किया जायगा।

9. शोध सामग्री की उपलब्धता (Avaibility of the Source Material) :

श्री अरविन्द घोष के पांडिचेरी आश्रम और देश के उच्च पुस्तकालयों में अध्ययन विषयों से सम्बन्धित अपार शोध सामग्री उपलब्ध है। उल्लेखनीय है कि न केवल राष्ट्रीय शिक्षा आंदोलन के प्रायः सभी प्रमुख कर्णधारों के शिक्षा सम्बन्धी विचारों तथा राष्ट्रीय शिक्षा के क्रियान्वयन पर प्रचुर साहित्य उपलब्ध है, बल्कि श्री अरविन्द समेत सबों का स्वयं अपना–अपना विशाल रचना संसार भी पुस्तकालयों एवं नेट पर सहजता से प्राप्त है। अतः शोध सामग्री की उपलब्धता की कोई समस्या नहीं है।

10. शोध परियोजना :

प्रस्तावित अध्ययन इस संकल्पना पर आधारित है कि श्री अरविन्द घोष औपनिवेशिक काल में चले राष्ट्रीय शिक्षा आंदोलन के प्रमुख पुरोधा थे, जिनके शिक्षा सम्बन्धी विचारों का प्रासंगिक महत्व है।

11. कार्य योजना (Work Plan) :

प्रस्तावित शोध परियोजना के निम्नलिखित अध्यायों के अन्तर्गत सम्पन्न किया जाएगा–

	भूमिका
प्रथम अध्याय :	औपनिवेशिक शिक्षा नीति
द्वितीय अध्याय :	औपनिवेशिक शिक्षा नीति के विकल्प की तलाश
तृतीय अध्याय :	श्री अरविन्द घोष का शिक्षा दर्शन
चतुर्थ अध्याय :	राष्ट्रीय शिक्षा आंदोलन और श्री अरविन्द घोष
पंचम अध्याय :	श्री अरविन्द घोष के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता
	निष्कर्ष

12. स्रोत संदर्भ (Bibliography) :

(क) प्राथमिक स्रोत :

1. श्री अरविन्द घोष की रचनाएँ
2. दि सावित्री : ए लिजेन्ड एंड ए सिम्बॉल, 1940
3. दि लाइफ डिवाइन, 1939
4. सिंथेसिस ऑफ योगा, 1948
5. एसेज ऑन गीता, 1983
6. दि सेक्रेट ऑफ वेदा, 1998
7. दि मदर, 1980
8. दि आवर ऑफ गॉड
9. दि साइकिक बीईंग
10. लाइट्स ऑन योगा
11. दि आइडियल ऑफ ह्यूमन यूनिटी
12. ए सिस्टम ऑफ नेशनल एजुकेशन
13. ऑन एजुकेशन

(ख) द्वैतियक स्रोत :

1. फर्कुहार, जे0 एन0, मार्डर्न रिलिजियस मूवमेन्ट्स इन इंडिया, लन्दन, 1914
2. मैली, एल0 एम0 एस0 ओ0, मार्डर्न इंडिया एंड दि वेस्ट, लंदन, 1968
3. मैक्कली, बी0 टी0, एजुकेशन एण्ड दि ऑरिजिन्स ऑफ इंडियन नेशनलिज्म, प्रिंस्टन, 1964
4. काफ, डेविड, ब्रिटिश ओरिएन्टलिज्म एंड इंडियन रिनासां, बर्कले, 1969
5. सिन्हा, डी0, दि एजुकेशनल पॉलिसी ऑफ दि ईस्ट इंडिया कंपनी इन बंगाल, कोलकाता, 1964
6. ट्रेवेलियन, सी0 ई0, ऑन दि एजुकेशन ऑफ दि पिपुल ऑफ इंडिया, लंदन, 1876

19/04/24

19/04/24

7. मुखर्जी, हरिदास एवं उमा, दि ओरिजिन्स ऑफ दि नेशनल एजुकेशन मूवमेन्ट, 1905–10, कोलकत्ता, 1957
8. नायक, जे0 पी0 एवं नरूला, ए हिस्ट्री ऑफ एजुकेशन इन इंडिया, नई दिल्ली, 1957
9. नारायण, जे0 पी एजुकेशन फॉर आवर पिपुल, नई दिल्ली, 1978
10. घोष, एस0 सी0 एजुकेशन पॉलिसी इन इंडिया सिन्स वारेन हेस्टिंग्स, कोलकत्ता,1989
11. दत्ता, के0 के0 ए सोशल हिस्ट्री ऑफ माडर्न इंडिया, दिल्ली, 1975
12. चटर्जी, के0 के0, इंगलिश एजुकेशन इन इंडिया, दिल्ली, 1976
13. वसु, ए0 एन, एजुकेशन इन माडर्न इंडिया, कोलकत्ता,1947
14. हावेल, ए0, एजुकेशन इन बिटिश इंडिया, कोलकत्ता,1872
15. थामस, एफ0, डब्ल्यू0, दि हिस्ट्री एंड प्रासपेक्ट्स ऑफ ब्रिटिश एजुकेशन इन इंडिया, लंदन,1891
16. कौशिक, अशोक, योगीराज अरविन्द, नई दिल्ली, 2004
17. प्रसाद, बिन्दु नारायण, श्री अरविन्द, दिल्ली, 2005
18. प्रसाद, अनुराधा, महात्मा गाँधी और अरविन्द घोष का तुलनात्मक अध्ययन, दिल्ली, 2007
19 सिंह, रामधारी, श्री अरविन्दो : मेरी दृष्टि में, नई दिल्ली, 2008
20. आयंगर, के0 आर0 श्रीनिवास, श्री अरविन्दो : जीवनी और इतिहास, पांडिचेरी, 1945

शोध पर्यवेक्षक

19/04/24

डा0 अरविन्द वर्मा
विभागध्यक्ष
राजनीति विज्ञान विभाग
राम कृष्ण महाविद्यालय
अंगीभूत ईकाई,
ल0ना0 मि0 वि0 वि0 दरभंगा।

गवेषिका

19/04/24

नेहा
PAT रॉल नं0–22160123
सत्र–2021–22

20.04.24.

Head
University Department of Political Science
Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga

MBVarma
20.04.2024

20.4.24

20/04/2024